Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 5 No. : 12 Jan. - 2020

International Journal of Social Science & Management Studies

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 3.9

International Journal of Social Science & Management Studies

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

ISRS International Scientific Research Solution

UKAF

International Journal of Social Science & Management Studies (Peer Reviewed & Refereed Research Journal) I.J.S.S.M.S.
& Impact factor - 3.9 Research Journal
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 5, No. – 12, Jan. 2020

मध्यप्रदेश के विरासत (1956–1961)

वीरेन्द्र कुमार झारिया
शोधार्थी, (इतिहास) रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

प्रस्तावना :– 1 नवम्बर 1956 को मध्य प्रदेश राज्य बनने के पूर्व यह भू–भाग मध्य भारतः विन्धय प्रदेश, भोपाल राज्य और पुराने मध्य प्रदेश (सी.पी.एण्ड.वरार) के तौर पर प्रशासित रहा। इस दौर में औद्योगीकरण की स्थिति कुछ इस प्रकार थी–

मध्य भारत राज्य अपने समय में कपड़ा मिलों के साथ–साथ स्टील, फर्नीचर आदि उद्योगों के लिए पहचाना जाता था। उस समय मुंवई के वाद मध्य भारत से ही सवसे ज्यादा सूती मिले थी। ग्वालियर का इंजीनियरिंग वर्क्स मध्य भारत का सवसे वड़ा कारखाना था। इसमें सिंधिया स्टेट रेल्वे के इंजन डिव्वों और माल के डिव्वों की मरम्मत के साथ कृषि यंत्र विविध प्रकार के औजार लोहे और पीतल की ढालने का काम तथा फर्नीचर तैयार होता है। यहॉ लगभग 400 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त था।[1]

इंदौर का भड़ारी आयरन एण्ड स्टील का कारखाना तेल निकालने के यंत्र गन्ने का रस निकालने की चरखी आदि वस्तु वानाता था। यहॉ 300 लोगों को रोजगार मिलता था। देवास, इण्डस्ट्रियल इंजीनियरिंग कारखाने में अनेक प्रकार की मशीनों के औजार पुर्जे आदि और इंदौर के ओरियंटल साईंस एवरेंट्स वर्कशॉप में विज्ञान के यंत्र वनाए जाते थे। ग्वालियर व इदौर का पॉटरीज कारखाना ग्वालियर की लैदर फैक्ट्री, ग्वालियर तथा इंदौर में वनस्पति घी उत्पादन के कारखाने राजगढ़ में सावुन वनाने का कारखाना, ग्वालियर और राऊ में कांच के कारखाने ग्वालियर में मैस फैक्ट्री सहित मध्य भारत में कई उद्योग काम कर रहें थे। ग्वालियर के पास वानमोर में सीमेंट वनाने का कारखाना था, जहॉ हर साल 60 हजार टन सीमेन्ट तैयार होता था।[2]

इनमें से तीन कारखाना अधिनियम 1948 के अंतर्गत खोले गए थे। काटन टेक्स इंदौर, इंदौर के मालवा यूनाइटेड मिल्स लिमिटेड, हुकुमचंद मिल्स–लिमिटेड दी कल्याण मिल्स लिमिटेड दी राजकुमार मिल्स लिमिटेड नंदलाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड, राय वहादुर कन्हैया लाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड स्वदेशी कॉटन एण्ड फ्लोर मिल्स लिमिटेड इंदौर की प्रमुख कपड़ा मिलें थीं।[4]

विंध्य प्रदेश :– विंध्य प्रदेश में खेती के अलावा दूसरा प्रमुख उद्योग जंगल में काम करने का था। लकड़ी काटने का कार्य अधिकतर अनसूचित जाति के लोग करते थे। कुछ लोग शराव की भट्टियों, रोलिंग मिल वीड़ी तेल मिल चावल–मिल छापेखाने, सावुन, मिटटी के वर्तन, आटा चक्की लोहा–फौलाद के कारखानों में संलग्न थे।

पुराना मध्य प्रदेश (सी.पी.एण्ड वारार) स्वतंत्रता के वाद इस राज्य में सूती कपड़ा उद्योग, सीमेंट उद्योग, कागज उद्योग, शीशा उद्योग, जनरल इंजीनियरिंग व इलेक्ट्रिकल, इंजीनियरिंग तथा शाराव पेन्ट वार्निश और फल–संरक्षण उद्योग विशेष उल्लेखनीय थे। राज्य में अनेक कुटीर व लघु उद्योग भी चल रहे थें।

सूती कपड़े का उद्योग पुराने मध्य प्रदेश का सवसे प्रमुख उद्योग माना जाता था। यहॉ इस उद्योग के पनपने का सबसे वड़ा कारण राज्य के विस्तृत कपास क्षेत्र थे। मध्य प्रदेश का दूसरा प्रमुख उद्योग सीमेंट उद्योग था। भारत में इस उद्योग का पूर्णतः प्रादुर्भाव सन् 1912 में हुआ और तत्पश्चात् सन् 1914 में ही मध्य प्रदेश में कटनी सीमेंट एण्ड इंड़स्ट्रियल कम्पनी की स्थापना हुई। इस समय समस्त देश में सीमेंट उद्योग की केवल तीन ही इकाईयॉ थी जिनमें से उपर्युक्त एक इकाई राज्य में थी। जबलपुर जिला में स्थित एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी का कारखाना देश में सीमेंट का सबसे बड़ा कारखाना माना जाता है।[5]

भोपाल राज्य :– कृषि प्रधान राज्य होने के बाद भी भोपाल राज्य के दौरान औद्योगिक क्षेत्र में सराहनीय प्रगति हुई। भोपाल में स्थित कपड़ा शक्कर, पुट्ठा, माचिस, कॉच, रूई, औठना, तेल आदि के बड़े–बड़े कारखानों से हजारों श्रमिकों को रोजगार प्राप्त होता था। नए उद्योगों को हर प्रकार की सुविधाए दी जाती थी। इससे यहाँ फ्लोर मिल पेन्टस–वार्निश स्टील, टिरोलिंग साइकिल के पार्टस सेनेटरी–वेयर आदि के कारखाने भी खुलें खादी की बुनाई, लकड़ी के खिलौने व कंघियॉ, फर्नीचर तथा लकड़ी का अन्य काम यहॉ के प्रमुख गृह उद्योग थे।

राज्य में नेपा नगर मिल्स पूर्व निमाड़ जिला (अब बुरहानपुर जिला) नामक कागज का कारखाना था।

नेपा मिल्स का उत्पादन कार्य जनवरी 1955 से प्रारंभ हो गया था। कागज का उत्पादन करने वाली यह भारत की एक मात्र एवं प्रथम मिल थी। इस समय जबलपुर में शीशे के कारखाने चल रहे थे।

मध्य प्रदेश अतीत की तरह मुख्य तौर पर कृषि पर अधारित राज्य है। लेकिन औद्योगिक विकास राज्य की अर्थ व्यवस्था में विविधीकरण के लिए जरूरी है। राज्य में ग्रामोद्योगों की खासी भूमिका है। कृषि के बाद राज्य की अर्थ व्यवस्था ग्रामाद्योगों के कांधे पर आ जाती है। राज्य में बड़े उद्योगों की स्थापना की दिशा में सरकार बाहरी निवेश को बढ़वा दे रही है तथा बाहरी औद्योगिक इकाइयों को राज्य में विकास के लिए अनुकूल वातावरण मुहैया कराने की नीति पर चल रही है। आज मध्य प्रदेश की इंदौर, पीथमपुर भोपाल मण्डीदीप, ग्वालियर, मालनपुर और उसके समीपवर्ती औद्योगिक क्षेत्र प्रमुख उद्योग केन्द्रों के तौर पर उभर रहे हैं। राज्य के अन्य स्थानों पर भी औद्योगीकरण का सिल–सिला तेजी से चल रहा है।

मध्यप्रदेश के विकास कार्य :–

औद्योगिक नीति 1956 – 1946 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव के स्थान पर एक नया औद्योगिक प्रस्ताव 1956 30 अप्रैल 1956 को स्वीकृत किया गया 1948 की सामाजिक स्थिति में काफी फर्क आ चुका था। आधार भूत सामाजिक एवं आर्थिक नीतियों के रूप में समाज वादी ढंग के समाज की धारणा जनता के बीच प्रबल स्वीकृत पाकर संसद में भी मान्यता पा चुकि थी। सन् 1956 की औद्योगिक नीति में उद्योगों के लिए कई सुझाव दिये गये थे उन सुझावों का पालन करते हुए मध्य प्रदेश एक विकास शील राज्यों की श्रेणी में आ पाया है।

मध्य प्रदेश विरासत :–

1. **भारत हेवी इलेक्ट्रीकल लिमिटेड़ भोपाल :–** इस कारखाने को भोपाल में सन् 1960 में ब्रिटेन के एक कारखाने की मदद से सार्वजनिक क्षेत्र में बिजली का भारी सामान बनाने के लिए स्थापित किया गया था। भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड. की भोपाल इकाई को देश में विद्युत उपकरणों के उत्पादन में अग्रेणी भूमिका एवं प्रथम स्थापन पाने का गौरव प्राप्त है यह संस्था निरंतर कई वर्षो से विद्युत उपकरणों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्य करती है। अन्य आधार भूत परियोजनाओं से सम्बन्धित संयत्रों एवं सेवाओं के क्षेत्र में अपना निरन्तर योगदान देता आ रहा है। इस संस्थान में निर्मित किये जा रहें उत्पादों में सभी प्रकार एवं क्षमता के जल टर्वाइन एवं जनरेटर विभिन्न प्रकार के हीट एक्सचेंजर पावर, ट्रासफर्मर, स्विचगियर, कन्ट्रोल गियर, औद्योगिक, रेक्टी फायर, पावर केयेसिटर, रेल इंजनों हेतु संकर्षण मीटरे एवं कट्रोल उपकरण, डीजल जनरेटिंग सेट, तथा विभिन्न उद्योगों हेतु माध्यम व उच्च क्षमता वाली विद्युत मोटरे तथा सैन्य क्षेत्र हेतु विशेष उपकरण प्रमुख है। ताप–एवं जल विधुत की पुरानी इकाइयों के आधुनिकीकरण, एवं नवीनीकरण के क्षेत्र में भी भेल भोपाल को विशेषज्ञता प्राप्त है तथा इस प्रकार क्षेत्र में योगदान भी निरन्तर विकास की ओर है।

ताप एवं विद्युत की पुरानी इकाइयों के आधुनिकीकरण,एव नवीनीकरण के क्षेत्र में भी भेल–भोपाल को विशेष दक्षाइता हासिल है ये भारत के नवरत्नो में से एक कम्पनी है। इसका मध्य प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।[8]

2. **नेपा नगर कागज उद्योग** – 1948–49 में नेशनल न्यूज प्रिंट एण्ड पेपर मिल नेपानगर जिला बुरहानपुर की स्थापना मध्य प्रदेश राज्य में किया गया यहां अखवारी कागज का निर्माण किया जाता है। इस पेपर मिल से लगभग एक वर्ष में 88 हजार मीट्रिक टन अखवारी कागज का निर्माण किया जाता है यह पूरी तहर कार्य 1956–1957 के बीच में कार्य करना शुरू किया और अब इसकी उत्पादन क्षमता को और वृद्धि करने के लिए मध्य प्रदेश सरकार अखवारी कागज विदेशों से आयात नही करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त राज्य में और कई कागज उद्योग स्थापित किये गये है। जैसे अमलई का कागज उद्योग शहडोल, इसके अलावा कागज का निर्माण अन्य स्थानों में भी किया जाता है। भोपाल, रतलाम, ग्वालियर इन्दौर होशंगाबाद में कागज का निर्माण किया जाता है। उन उद्योगों के लिए कच्चे माल जैसे बॉस, रीवा, सीधी, मण्डला, बालाघाट तथा अब छतीसगढ़ में जा चुके कुछ जिले, बिलासपुर,सरगुजा, तथा रायगढ़ से बांस प्राप्त होता है इस कारखाने को बुढ़ार खदान् से (सोहागपुर) कोयला क्षेत्र से कोयला दिया जाता है। इस कारखाने में 90 प्रतिशत पुस्तक छपने योग्य कागज बनता है। कागज उद्योग ने प्रदेश के वनों के उत्पादन का

समुचित उपयोग किया है। जिसमें न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था को सहारा मिला है बल्कि रोजगार में भी बढोत्तरी हुई है।[9]

3. **भिलाई स्टील प्लांट :–** भारत और यू.एस.ए के सहयोग से 1955 में बना भिलाई स्टील प्लांट म.प्र. के मुख्यमंत्री पं. रवि शंकर शुक्ल के कर कमलों से स्थापित किया गया। भिलाई में एकीकृत लौह और इस्पात कार्यो की स्थापना के लिए जाना जाता है। जब स्थापित किया गया तो एक मिलियन टन स्टील पिंड की कार्य क्षमता प्रांरभिक दौर में करने हेतु हस्ताक्षर किया गया था। यह कारखाना भिलाई में स्थापित करने का मुख्य आधार था 100 किमी,दूर दल्ली राजहर में लौह अयस्क की उपलब्धता थी नंदिनी से चुना पत्थर यह संयंत्र से करीब 25 कि.मी. और लभगम 140 कि.मी दूर हिंरी में डोलेामाइट था। 4 फरवरी 1959 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद द्वारा पहली विस्फोट भरी के उद्घाटन के साथ शुरू किया गया। 1967 में यह संयंत्र को 2.5 मिलियन टन तक बढा दिया गया था। 1988 में एम.टी का विस्तार पूरा हो गया था। 4 चरण में मुख्य फोकस निरन्तर कांसटिग इकाई और प्लेट मिल यहॉ पर इस्पात कार्स्टिग और आकार देने की एक नई तकनीक थी। भिलाई इस्पात संयंत्र भारतीय रेल्वे ट्रैक का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। इसमें दुनिया में 260 मीटर का सबसे लंबा रेल्वे ट्रैक बनाने का रिकार्ड है। प्रधान मंत्री के ट्राफी के विजेता कुल 11 बार भिलाई इस्पात संपंत्र आधुनिकीकरण और नई परियोजनाओं के माध्यम से इस्पात उत्पादन की अपनी क्षमता बढ़ा रहा है। यह परियोजना 17.000 करोड़ रूपये की परियोजना भीलई स्टील प्लांट (बी.एस.पी) इन संयंत्र के ब्लास्ट फर्नेस (बी.एफ) संख्या 8 महीने में शुरू हुई है। महामाया को चालू करने की दिशा में ये पहला कदम है इससे मध्य प्रदेश की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। जिसमें 4060 घन मीटर की उपयोगी मात्रा और 8030 टन गर्म धातु प्रति दिन में 2.8 मिलियन टन प्रतिवर्ष उत्पादन करने की क्षमता है। नई फर्नेस ऑनस्ट्री के साख्य, सेल बीएसपी के गर्म धातु क्षमता प्रतिवर्ष 5 मिलियन टन के मौजुदा उत्पादन अंतर से 7.5 मिलियन टन प्रतिवर्ष तक बढ़ाने का प्रयास किया गया है।7

निष्कर्ष :– मध्यप्रदेश में 1956 से 1961 के बीच में जो विकास कार्य किये गये है वो मध्यप्रदेश के विरासत के श्रेणी में गिने जाते है। उनकी जानकारी मध्यप्रदेश के विभिन्न संग्रहलाय एवं पुस्तकालयों में देखने को मिलते है जहां विभिन्न जानकारी प्रस्तुत किये गये है। मध्य प्रदेश के गौरव शाली अतीत को जन साधारण के समक्ष सुनियोजित रूप से प्रस्तुत करने के उद्देश्य से इस संग्रहालय में जीवाश्म प्रागैतिहासिक, प्रतिमा, उत्खन्न, अभिलेख, मुद्रा पेंटिंग चित्राकंत, छाया चित्र, पाण्डुलिपि, वस्त्र, धातु, प्रतिमा, आभूषण, विशेष, प्रदर्शनी तथा स्वतंत्रता संग्राम आदि कला दीर्धाओं के रूप में वर्गीकृत कर प्रदर्शित किया गया है। इस संग्रहालय भवन में लगभग 16 दीर्घाओं में पुरातन महत्व की सामग्री, शिल्प तथा ऐतिहासिक पुरासम्पदाओं का प्रदर्शन किया गया। संरक्षित पुरासामग्री के लिए राज्य संग्रहालय में विशेष स्थान का प्रावधान है। संग्रहालय में प्रदेश के लगभग 5000 पुरावशेषों का प्रदर्शन काल कम अनुसार किया गया है। इनमें से एक ऑटोग्राफ गैलरी में विभिन्न विधाओं की कई महान हस्तियों के कुछ दुर्लभ पत्रो एवं हस्ताक्षरों का प्रदर्शन किया गया है। राज्य संग्रहालय की इस गैलरी में दुर्लभ सामग्री को देखना महत्वपूर्ण पल के समान होता है। राज्य संग्रहालय की इस गैलरी में धर्माचार्या, समाज सुधारक, राज नेता इतिहास कार, साहित्यकार, कलाकार, आदि शामिल है। इस संग्रहालय में मध्यप्रदेश के विकास से संबधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की गई जो शोधार्थीओं के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करने में सहयोग प्रदान करता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान जितेन्द्र सिह भदोरिया पृ. 81
2. मध्य प्रदेश एक समग्र मध्ययन. महेश कुमार वर्णवाल पृ51
3. मध्य प्रदेश अतीत और आज, वही पृ432.433
4. मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान मुकेश महेश्वरी पृ.405
5. मध्य प्रदेश अतीत और आज वही. पृ.401,402
6. मध्य प्रदेश एक परिचय श्रीकांत जोशी पृ.351
7. मध्य प्रदेश एक समग्र अध्ययन वही. पृ.204–205
8. मध्य प्रदेश अतीत और आज वही. पृ.310
9. मध्य प्रदेश एक परिचय राकेश गौतम पृ.4.2,4.3

Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2394-3580 VOLUME - 7 No. : 8 Jan. - 2020

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

Research Journal SRF Book Publication

ISRS International Scientific Research Solution

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 4.2

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

Vol. – 7, No. – 3, Jan. 2020
Swadeshi Research Foundation
ISSN : 2394-3580
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact Factor - 4.2 Research Journal

मध्यप्रदेश में किये गये विकास कार्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (1956–1961)

वीरेन्द्र कुमार झारिया
शोधार्थी, (इतिहास) रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

प्रस्तावना :– मध्यप्रदेश औद्योगीकरण की दिशा में तेजी से बढ़ता हुआ राज्य है। राज्य में वह सब है जो उद्योग को स्थापित और बढाने के लिए चाहिए। देश के केन्द्र में बसे होने के साथ ही यहाँ खनिजों के भण्डार है। राज्य की नदियाँ प्रदेश ही नही देश के लोकतंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका रखती है। वे किसानों और आम लोगों के साथ ही राज्य मे प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित मानव शक्ति पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। वैसे भी राज्य की कृषि प्रधान वर्षा आधारित अर्थव्यवस्था को विकास के उच्च स्तर पर ले जाने के लिए औद्योगिकी करण जरूरी है। इससे अर्थव्यवस्था का विविधीकरण होता है तथा वर्षा पर निर्भरता कम होती है। कृषि उत्पादों के मूल्य वर्धन की सुविधा उपलब्ध होती है। तथा कृषि उत्पादन के लिए आदान प्रदान प्राप्त होते है साथ ही कृषि पर रोजगार के लिए स्थिरता कम होती है। मध्य प्रदेश में उद्योगों और औद्योगीकरण का इतिहास पुराना है। स्वतंत्रता के पूर्व ही इंदौर कपड़ों के निर्माण का एक बड़ा केन्द्र बन गया था। ग्वालियर में भी औद्योगीकरण की दिशा में काफी काम हुआ। देश के आजादी के बाद और 1 नवम्बर 1956 को मध्य प्रदेश राज्य बनने के पूर्व यह भू–भाग मध्य भारतः विन्धय प्रदेश, भोपाल राज्य और पुराने मध्य प्रदेश (सी.पी.एण्ड. वरार) के तौर पर प्रशासित रहा। इस दौर में औद्योगीकरण की रिथति कुछ इस प्रकार थी–

मध्य भारत राज्य अपने समय में कपड़ा मिलों के साथ–साथ स्टील, फर्नीचर आदि उद्योगों के लिए पहचाना जाता था। उस समय मुंवई के वाद मध्य भारत से ही सबसे ज्यादा सूती मिले थी। ग्वालियर का इंजीनियरिंग वर्क्स मध्य भारत का सवसे बड़ा कारखाना था। इसमें सिंधिया स्टेट रेल्वे के इंजन डिब्वों और माल के डिब्बों की मरम्मत के साथ कृषि यंत्र विविध प्रकार के औजार लोहे और पीतल की ढालने का काम तथा फर्नीचर तैयार होता है। यहाँ लगभग 400 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त था।[1]

इंदौर का भड़ारी आयरन एण्ड स्टील का कारखाना तेल निकालने के यंत्र गन्ने का रस निकालने की चरखी आदि वस्तु बानाता था। यहाँ 300 लोगों को रोजगार मिलता था। देवास, इण्डस्ट्रियल इंजीनियरिंग कारखाने में अनेक प्रकार की मशीनों के औजार पुर्जे आदि और इंदौर के ओरियंटल साईंस एवरेंट्स वर्कशॉप में विज्ञान के यंत्र वनाए जाते थे।

ग्वालियर व इदौर का पॉटरीज कारखाना ग्वालियर की लैदर फैक्ट्री, ग्वालियर तथा इंदौर में वनस्पति घी उत्पादन के कारखाने राजगढ़ में साबुन बनाने का कारखाना, ग्वालियर और राऊ में कांच के कारखाने ग्वालियर में मैस फैक्ट्री सहित मध्य भारत में कई उद्योग काम कर रहें थे। ग्वालियर के पास बानमोर में सीमेंट बनाने का कारखाना था, जहॉ हर साल 60 हजार टन सीमेन्ट तैयार होता था।[2]

मध्य भारत में रूई का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में होने तथा प्राकृतिक वातावरण अनुकूल होने के कारण 16 कपड़े मिले यहॉ कार्य कर रही थीं। इनमें 11 हजार करघे व 5 लाख स्पिंडल थे। 150 हजार लोगों को रोजगार के साथ ही 2 लाख 50 हजार रूई की गॉठों की खफत होती थी। इस रूई का अधिकांश भाग मध्य भारत में ही उत्पादन होता था। इन मिलों द्वारा लगभग 30 लाख गज कपड़ा तैयार होता था जो कि अखिल भारतीय उत्पादन का 6 प्रतिशत था। इसमें अधिकांश निर्यात किया जाता था। मुंबई तत्कालीन (बंबई) के बाद मध्य भारत देश में सूती मिलों का सबसे बड़ा केन्द्र था। दो–एक मिलों में रेशमी और ऊनी कपड़ा भी तैयार होता था। इंदौर में चार कृत्रिम रेशम बनाने बाली ईकाईया थी।3

1. न्यू मर्चेन्ट सिल्क
2. इंदौर रेयॉन वीतिंका फैक्ट्री
3. नेशनल सिल्क मिल्स
4. सुबोध इंडस्ट्रीज

इनमें से तीन कारखाना अधिनियम 1948 के अंतर्गत खोले गए थे। काटन टेक्स इंदौर, इंदौर के मालवा यूनाइटेड मिल्स लिमिटेड, हुकुमचंद मिल्स–लिमिटेड दी कल्याण मिल्स लिमिटेड दी राजकुमार मिल्स लिमिटेड नंदलाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड, राय बहादुर कन्हैया लाल भण्डारी मिल्स

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 7, No. – 3, Jan. 2020
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact Factor - 4.2 Research Journal

लिमिटेड स्वदेशी कॉटन एण्ड फ्लोर मिल्स लिमिटेड इंदौर की प्रमुख कपड़ा मिलें थीं।4

भोपाल राज्य :– कृषि प्रधान राज्य होने के बाद भी भोपाल राज्य के दौरान औद्योगिक क्षेत्र में सराहनीय प्रगति हुई। भोपाल में स्थित कपड़ा शक्कर, पुट्ठा, माचिस, कॉच, रूई, औठना, तेल आदि के बड़े–बड़े कारखानों से हजारों श्रमिकों को रोजगार प्राप्त होता था। नए उद्योगों को हर प्रकार की सुविधाए दी जाती थी। इससे यहाँ फ्लोर मिल पेन्टस–वार्निश स्टील, टिरोलिंग साइकिल के पार्टस सेनेटरी–वेयर आदि के कारखाने भी खुलें खादी की बुनाई, लकड़ी के खिलौने व कंघियॉ, फर्नीचर तथा लकड़ी का अन्य काम यहॉ के प्रमुख गृह उद्योग थे।

विंध्य प्रदेश :– विंध्य प्रदेश में खेती के अलावा दूसरा प्रमुख उद्योग जंगल में काम करने का था। लकड़ी काटने का कार्य अधिकतर अनसूचित जाति के लोग करते थे। कुछ लोग शराब की भट्टियों, रोलिंग मिल बीड़ी तेल मिल चावल–मिल छापेखाने, साबुन, मिटटी के वर्तन, आटा चक्की लोहा–फौलाद के कारखानों में संलग्न थे।

पुराना मध्य प्रदेश (सी.पी.एण्ड बारार) स्वतंत्रता के बाद इस राज्य में सूती कपड़ा उद्योग, सीमेंट उद्योग, कागज उद्योग, शीशा उद्योग, जनरल इंजीनियरिंग व इलेक्ट्रिकल, इंजीनियरिंग तथा शाराब पेन्ट वार्निश और फल–संरक्षण उद्योग विशेष उल्लेखनीय थे। राज्य में अनेक कुटीर व लघु उद्योग भी चल रहे थें।

सूती कपड़े का उद्योग पुराने मध्य प्रदेश का सबसे प्रमुख उद्योग माना जाता था। यहॉ इस उद्योग के पनपने का सबसे बड़ा कारण राज्य के विस्तृत कपास क्षेत्र थे। मध्य प्रदेश का दूसरा प्रमुख उद्योग सीमेंट उद्योग था। भारत में इस उद्योग का पूर्णतः प्रादुर्भाव सन् 1912 में हुआ और तत्पश्चात् सन् 1914 में ही मध्य प्रदेश में कटनी सीमेंट एण्ड इंड़स्ट्रियल कम्पनी की स्थापना हुई। इस समय समस्त देश में सीमेंट उद्योग की केवल तीन ही इकाईयॉ थी जिनमें से उपर्युक्त एक इकाई राज्य में थी। जबलपुर जिला में स्थित एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी का कारखाना देश में सीमेंट का सबसे बड़ा कारखाना माना जाता है।[5]

राज्य में नेपा मिल्स पूर्व निमाड़ जिला (अब बुरहानपुर जिला) नामक कागज का कारखाना था। नेपा मिल्स का उत्पादन कार्य जनवरी 1955 से प्रारंभ हो गया था। कागज का उत्पादन करने वाली यह भारत की एक मात्र एवं प्रथम मिल थी। इस समय जबलपुर में शीशे के कारखाने चल रहे थे।

मध्य प्रदेश अतीत की तरह मुख्य तौर पर कृषि पर अधारित राज्य है। लेकिन औद्योगिक विकास राज्य की अर्थ व्यवस्था में विविधीकरण के लिए जरूरी है। राज्य में ग्रामोद्योगों की खासी भूमिका है। कृषि के बाद राज्य की अर्थ व्यवस्था ग्रामाद्योगों के कांधे पर आ जाती है। राज्य में बड़े उद्योगों की स्थापना की दिशा में सरकार बाहरी निवेश को बढ़वा दे रही है तथा बाहरी औद्योगिक इकाइयों को राज्य में विकास के लिए अनुकूल वातावरण मुहैया कराने की नीति पर चल रही है। आज मध्य प्रदेश की इंदौर, पीथमपुर भोपाल मण्डीदीप, ग्वालियर, मालनपुर और उसके समीपवर्ती औद्योगिक क्षेत्र प्रमुख उद्योग केन्द्रों के तौर पर उभर रहे हैं। राज्य के अन्य स्थानों पर भी औद्योगीकरण का सिल–सिला तेजी से चल रहा है।

मध्यप्रदेश के विकास कार्य :–

औद्योगिक नीति 1956 – 1946 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव के स्थान पर एक नया औद्योगिक प्रस्ताव 1956 30 अप्रैल 1956 को स्वीकृत किया गया 1948 की सामाजिक स्थिति में काफी फर्क आ चुका था। आधार भूत सामाजिक एवं आर्थिक नीतियों के रूप में समाज वादी ढंग के समाज की धारणा जनता के बीच प्रबल स्वीकृत पाकर संसद में भी मान्यता पा चुकि थी। सन् 1956 की औद्योगिक नीति में उद्योगों के लिए कई सुझाव दिये गये थे उन सुझावों का पालन करते हुए मध्य प्रदेश एक विकास शील राज्यों की श्रेणी में आ पाया है।

मध्य प्रदेश विरासत :–

1. भिलाई स्टील प्लांट :– भारत और यू.एस.ए के सहयोग से 1955 में बना भिलाई स्टील प्लांट म.प्र. के मुख्यमंत्री पं. रवि शंकर शुक्ल के कर कमलों से स्थापित किया गया। भिलाई में एकीकृत लौह और इस्पात कार्यो की स्थापना के लिए जाना जाता है। जब स्थापित किया गया तो एक मिलियन टन स्टील पिंड की कार्य क्षमता प्रांरभिक दौर में करने हेतु हस्ताक्षर किया गया था। यह कारखाना भिलाई में स्थापित करने का मुख्य आधार था 100 किमी,दूर दल्ली राजहर में

लौह अयस्क की उपलब्धता थी नंदिनी से चुना पत्थर यह संयंत्र से करीब 25 कि.मी. और लभगम 140 कि.मी दूर हिररी में डोलोमाइट था। 4 फरवरी 1959 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद द्वारा पहली विस्फोट भरती के उद्घाटन के साथ शुरू किया गया। 1967 में यह संयंत्र को 2.5 मिलियन टन तक बढा दिया गया था। 1988 में एम.टी का विस्तार पूरा हो गया था। 4 चरण में मुख्य फोकस निरन्तर कांसटिग इकाई और प्लेट मिल यहाँ पर इस्पात कास्टिंग और आकार देने की एक नई तकनीक थी। भिलाई इस्पात संयंत्र भारतीय रेल्वे ट्रैक का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। इसमें दुनिया में 260 मीटर का सबसे लंबा रेल्वे ट्रैक बनाने का रिकार्ड है। प्रधान मंत्री के ट्राफी के विजेता कुल 11 बार भिलाई इस्पात संपंत्र आधुनिकीकरण और नई परियोजनाओं के माध्यम से इस्पात उत्पादन की अपनी क्षमता बढ़ा रहा है। यह परियोजना 17.000 करोड़ रूपये की परियोजना भीलई स्टील प्लांट (बी.एस. पी) इन संयंत्र के ब्लास्ट फर्नेस (बी.एफ) संख्या 8 महीने में शुरू हुई है। महामाया को चालू करने की दिशा में ये पहला कदम है इससे मध्य प्रदेश की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। जिसमें 4060 घन मीटर की उपयोगी मात्रा और 8030 टन गर्म धातु प्रति दिन में 2.8 मिलियन टन प्रतिवर्ष उत्पादन करने की क्षमता है। नई फर्नेस ऑनस्ट्री के साख्य, सेल बीएसपी के गर्म धातु क्षमता प्रतिवर्ष 5 मिलियन टन के मौजुदा उत्पादन अंतर से 7.5 मिलियन टन प्रतिवर्ष तक बढ़ाने का प्रयास किया गया है।[7]

2. भारत हेवी इलेक्ट्रीकल लिमिटेड़ भोपाल :– इस कारखाने को भोपाल में सन् 1960 में ब्रिटेन के एक कारखाने की मदद से सार्वजनिक क्षेत्र में बिजली का भारी सामान बनाने के लिए स्थापित किया गया था। भारत हैवी इलेक्टिकल्स लिमिटेड. की भोपाल इकाई को देश में विद्युत उपकरणों के उत्पादन में अग्रेणी भूमिका एवं प्रथम स्थापन पाने का गौरव प्राप्त है यह संस्था निरंतर कई वर्षो से विद्युत उपकरणों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्य करती है। अन्य आधार भूत परियोजनाओं से सम्बन्धित संयत्रों एवं सेवाओं के क्षेत्र में अपना निरन्तर योगदान देता आ रहा है। इस संस्थान में निर्मित किये जा रहें उत्पादों में सभी प्रकार एवं क्षमता के जल टर्वाइन एवं जनरेटर विभिन्न प्रकार के हीट एक्सचेंजर पावर, ट्रासफर्मर, स्विचगियर, कन्ट्रोल गियर, औद्योगिक, रेक्टी फायर, पावर केयेसिटर, रेल इंजनों हेतु संकर्षण मीटरे एवं कट्रोल उपकरण, डीजल जनरेटिंग सेट, तथा विभिन्न उद्योगों हेतु माध्यम व उच्च क्षमता वाली विद्युत मोटरे तथा सैन्य क्षेत्र हेतु विशेष उपकरण प्रमुख है। ताप–एवं जल विधुत की पुरानी इकाइयों के आधुनिकीकरण, एवं नवीनीकरण के क्षेत्र में भी भेल भोपाल को विशेषज्ञता प्राप्त है तथा इस प्रकार क्षेत्र में योगदान भी निरन्तर विकास की ओर है।

ताप एवं विद्युत की पुरानी इकाइयों के आधुनिकीकरण,एव नवीनीकरण के क्षेत्र में भी भेल–भोपाल को विशेष दक्षज्ञता हासिल है ये भारत के नवरत्नो में से एक कम्पनी है। इसका मध्य प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।[8]

नेपा नगर कागज उद्योग :– 1948–49 में नेशनल न्यूज प्रिंट एण्ड पेपर मिल नेपानगर जिला बुरहानपुर की स्थापना मध्य प्रदेश राज्य में किया गया यहा अखवारी कागज का निर्माण किया जाता है। इस पेपर मिल से लगभग एक वर्ष में 88 हजार मीट्रिक टन अखवारी कागज का निर्माण किया जाता है यह पूरी तहर कार्य 1956–1957 के बीच में कार्य करना शुरू किया और अब इसकी उत्पादन क्षमता को और वृद्धि करने के लिए मध्य प्रदेश सरकार अखबारी कागज विदेशों से आयात नही करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त राज्य में और कई कागज उद्योग स्थापित किये गये है। जैसे अमलई का कागज उद्योग शहडोल. इसके अलावा कागज का निर्माण अन्य स्थानों में भी किया जाता है। भोपाल, रतलाम, ग्वालियर इन्दोर होशंगाबाद में कागज का निर्माण किया जाता है। उन उद्योगों के लिए कच्चे माल जैसे बॉस, रीवा, सीधी, मण्डला, बालाघाट तथा अब छत्तीसगढ़ में जा चुके कुछ जिले, बिलासपुर,सरगुजा, तथा रायगढ़ से बांस प्राप्त होता है इस कारखाने को बुढ़ार खदान् से (सोहागपुर) कोयला क्षेत्र से कोयला दिया जाता है। इस कारखाने में 90 प्रतिशत पुस्तक छपने योग्य कागज बनता है। कागज उद्योग ने प्रदशे के वनों के उत्पादन का समुचित उपयोग किया है। जिसमें न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था को सहारा मिला है बल्कि रोजगार में भी बढोत्तरी हुई है।[9]

निष्कर्ष :– मध्य प्रदेश के गौरव शाली अतीत को जन साधारण के समक्ष सुनियोजित रूप से प्रस्तुत करने के उद्देश्य से इस संग्रहालय में जीवाश्म प्रागैतिहासिक, प्रतिमा, उत्खन्न, अभिलेख, मुद्रा पेंटिंग चित्राकत, छाया चित्र, पाण्डुलिपि, वस्त्र, धातु, प्रतिमा, आभूषण, विशेष, प्रदर्शनी तथा स्वतंत्रता संग्राम आदि कला दीर्धाओं के रूप में वर्गीकृत कर प्रदर्शित किया गया है। इस

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 7, No. – 3, Jan. 2020
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact Factor - 4.2 Research Journal

संग्रहालय भवन में लगभग 16 दीर्घाओं में पुरातन महत्व की सामग्री, शिल्प तथा ऐतिहासिक पुरासम्पदाओं का प्रदर्शन किया गया। संरक्षित पुरासामग्री के लिए राज्य संग्रहालय में विशेष स्थान का प्रावधान है। संग्रहालय में प्रदेश के लगभग 5000 पुरावशेषों का प्रदर्शन काल कम अनुसार किया गया है। इनमें से एक ऑटोग्राफ गैलरी में विभिन्न विधाओं की कई महान हस्तियों के कुछ दुर्लभ पत्रो एवं हस्ताक्षरों का प्रदर्शन किया गया है। राज्य संग्रहालय की इस गैलरी में दुर्लभ सामग्री को देखना महत्वपूर्ण पल के समान होता है। राज्य संग्रहालय की इस गैलरी में धर्माचार्या, समाज सुधारक, राज नेता इतिहास कार, साहित्यकार, कलाकार, आदि शामिल है। इस संग्रहालय में मध्यप्रदेश के विकास से संबधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की गई जो शोधार्थीओं के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करने में सहयोग प्रदान करता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. शिव अनुराग पटैरया मध्य प्रदेश अतीत और आज, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल पृ.348
2. श्रीद्वान्त जोशी मध्य प्रदेश एक परिचय पृ.129
3. मध्य प्रदेश अतीत और आज वही पृ.349
4. मध्य प्रदेश समग्र अध्ययन, महेश कुमार वर्णवाल, Cosmos. Publication. P-171
5. मध्य प्रदेश अतीत और आज वही पृ.350
6. मध्य प्रदेश समग्र अध्ययन वही पृष्ठ 172
7. राकेश गौतम मध्य प्रदेश एक परिचय पृ.16.2
8. सम्पूर्ण और सर्वोतम मध्य प्रदेश मुकेश महेश्वरी पृ. 193
9. मध्य प्रदेश एक परिचय वही. पृ133
10. मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान मुकेश महेश्वरी पृ.192

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT CENTRE (HRDC)
Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya, (A Central University)
Sagar - 470 003 (MP) India

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

Certificate

UGC-SPONSORED REFRESHER COURSE ON
REVISITING THE INDIAN CULTURE IN HISTORY

This is to certify that Dr. Virendra Kumar Jhariya (Assistant Professor in History, Mekalsuta College, Dindori affiliated to Rani Durgavati Vishwavidhyalaya, Jabalpur, Madhya Pradesh) successfully participated in the Refresher Course on 'Revisiting the Indian Culture in History' held during 10th - 24th November, 2021 in online mode and obtained Grade A+.

Director

Course Coordinator

Vice Chancellor